Content

साठोत्तरी हिन्दी कविता: वस्तु और शिल्प

१९६०-१९७२

भूमिका::-

विषय प्रवेश

१- विषय का स्पष्टीकरण

२- विषय की नवीनता और महत्व

प्रथम अध्याय:- वस्तु और शिल्प: भारतीय और पाश्चात्य अवधारणाएँ

क-'वस्तु' और 'शिल्प' के विविध पर्याय

ख-भारतीय काव्यशास्त्र में 'वस्तु' विवेचन

ग-'वस्तु' सम्बन्धी पाश्चात्य मत

घ-'शिल्प' सम्बन्धी भारतीय अवधारणा

ङ-'शिल्प' सम्बन्धी पाश्चात्य अभिमत

च- कविता में 'वस्तु' और 'शिल्प' के अध्ययन की प्रासंगिकता

छ- निष्कर्ष-

द्वितीय अध्याय:- पृष्ठभूमि, समकालीन परिवेश, आधुनिकता बोध और साठोत्तरी कविता

क- राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य

ख- समकालीन वैचारिकता- मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, आधुनिकता बोध आदि जीवन-दृष्टियाँ ।

ग- साठोत्तरी कविता: अभ्युदय और प्रगति

घ- साठोत्तरी कविता: विविध काव्यान्दोलन

ङ- साठोत्तरी कविता: नये काव्यशास्त्र की संभावना

१- कविता का स्वरूप और उसकी भूमिका

२- वस्तु और शिल्प- साठोत्तरी काव्य-दृष्टि

च- निष्कर्ष-

तृतीय अध्याय-

साठोत्तरी कविता की वस्तु-चेतना

क- जीवन मूल्यों के बदलते संदर्भ

१- व्यक्तिगत जीवन मूल्य-प्रेम, सेक्स, व्यक्ति स्वातंत्र्य

२- अजनबीपन, अकेलापन, और मृत्युबोध की अनुभूतियां

३- परम्परागत सामाजिक मूल्यों का विघटन

सतीत्व, कौमार्य, शोषण, मातृत्व, श्रद्धा आदि

का अस्वीकार ।

४- विविध-सामाजिक जीवन-मूल्यों की स्थिति

ख- साठोत्तरी कविता के राजनीतिक संदर्भ

१- युवा कवि की राजनीतिक प्रतिबद्धता

२- तद्युगीन जनतांत्रिक व्यवस्था की सार्थकता का सवाल

३- चुनाव, कुर्सी और शोषण की राजनीति का विरोध

४- विरोध, विद्रोह और क्रान्ति के स्वर

५- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भ

ग- युगबोध और यथार्थबोध

१- जीवन का बहुमुखी यथार्थ- सामाजिक, राजनीतिक,

आर्थिक परिप्रेक्ष्य ।

२- आम आदमी के दु:ख-दर्द की अभिव्यक्ति ।

३- भविष्य की उपेक्षा

४- शोषण और वर्ग भेद के प्रति आक्रोश

५- युवा वर्ग की समस्याओं का निरूपण

घ- विचार तत्व की प्रधानता

ङ- साठोत्तरी कविता में सौन्दर्य - निरूपण

च- निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय-

साठोत्तरी हिन्दी कविता की भाषा

क- भाषा की नयी भंगिमा

१- गद्यात्मकता का आग्रह

२- सपाटबयानी

३- भाषायी सामान्यीकरण और रेटारिक

ख- साठोत्तरी कवियों का शब्द संसार

१- राजनीतिक परिवेश से लिए गए शब्द

२- आम आदमी के जीवन के आसपास से उठाये गए शब्द

३- यौन संदर्भों से लिए गए शब्द

४- पौराणिक संदर्भों से ली गई संज्ञाएं

५- तिलस्मी जासूसी तथा अन्य जीवन संदर्भों के शब्द

ग- भाषा की शक्ति और अर्थ गांभीर्य

१- जन भाषा का प्रयोग

२- सांकेतिकता

३- सूक्तिमयता

४- कथन की वक्रता , लोकोक्ति और मुहावरे

५- आक्रोश और व्यंग्य

६-

घ- साठोत्तरी काव्यभाषा: अभाव और उपलब्धियां

ड- निष्कर्ष-

पंचम अध्याय- साठोत्तरी कविता का शिल्प:

क- प्रतीक

१- परम्परागत प्रतीक: नई अर्थ गरिमा

२- सर्वथा,नवीन, निजी और विशिष्ट प्रतीक

ख- बिम्ब

१- मानवीय संदर्भों से संपृक्त बिम्ब

२- राजनीतिक विसंगतियों को उभारने वाले बिम्ब

३- आर्थिक सामाजिक स्थितियों के बोधक बिम्ब

४- प्राकृतिक बिम्ब

ग- नये उपमानों का प्रयोग

१- आम आदमी के दैनिक जीवन से लिए गए उपमान

२- प्राकृतिक उपमान

३- मानवीकरण

घ- साठोत्तरी कविता और छन्द

१- मुक्त छन्द

निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय-

साठोत्तरी लम्बी कविताएँ

१- अंधेरे में

२- मुक्ति प्रसंग

३- पटकथा

४- लुकमान अली

५- खण्ड-खण्ड पाखण्ड-पर्व

६- तलवार

अन्य लम्बी कविताएँ

सप्तम् अध्याय-

उपसंहार

साठोत्तरी हिन्दी कविता की वस्तुगत और शिल्पगत उपलब्धियाँ तथा सीमाएँ ।

परिशिष्ट-

१- विवेच्य - ग्रन्थ

२- संदर्भ - ग्रन्थ

३- पत्र - पत्रिकायें